भाषाओं का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष, 2008

श्री मत्सुरा, यूनेस्को के महानिदेशक का भाषाओं का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष, 2008 के समारोह पर संदेश

“भाषाएँ महत्वपूर्ण हैं !”

वर्ष 2008 को संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा भाषाओं का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष घोषित किया गया है । यूनेस्को, जिसे इस वर्ष के समस्त गतिविधियों के समन्वय का कार्य सौंपा गया है, वह एक अग्रणी संस्था के रूप में अपनी भूमिका निभाने हेतु कृत संकल्प है ।

संगठन भाषाओं के उस विशेष महत्त्व को भलीभाँति समझता है, जहाँ इसे मानवता के विरूद्ध आने वाली चुनौतियों का सामना अगले कई दशकों में करना होगा ।

भाषाएँ वस्तुतः व्यक्तियों और समूह विशेष की पहचान तथा उनके शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए परमावश्यक है । भाषाएँ विश्व और स्थानीय संदर्भ के मध्य सुदृढ़ विकास की दिशा में प्रगति और सौहार्दपूर्ण संबंध की स्थापना में अहम भूमिका अदा करती है ।

वे सर्व शिक्षा (ईएफए) के छः उद्देश्यों और सहस्राब्दी विकास उद्देश्यों (एमजीडी) की प्राप्ति के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं, जिन पर वर्ष 2000 में संयुक्त राष्ट्र राजी हुआ था ।

सामाजिक एकता के कारक के रूप में, भाषाएँ गरीबी और भूखमरी उन्मूलन (एमडीजी) में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है । साक्षरता, सीखने और जीवन दक्षता में सहायक भाषाएँ सार्वजनिक प्राथमिक शिक्षा (एमडीजी2) की प्राप्ति में महत्त्वपूर्ण हैं । एचआईवी/एड्स, मलेरिया और अन्य बीमारियों के विरूद्ध संघर्ष अभियान को संबंधित लोगों तक उनकी भाषाओं के माध्यम से प्रभावी ढंस से प्रेषित किया जाना चाहिए । स्थानीय तथा देशी ज्ञान और तकनीक की सुरक्षा, मूलतः स्थानीय और देशी भाषाओं से जुड़ा है, जो पर्यावरण को स्थिरता प्रदान (एमजीडी7) करने के उद्देश्य से आवश्यक है ।

इसके अतिरिक्त, सांस्कृतिक विभिन्नता, भाषायी विभिन्नता से जुड़ी हुई हैं, जिसका संकेत यूनेस्को की वैश्विक घोषणा सांस्कृतिक विभिन्नता और इसकी कार्ययोजना (2001), अमूर्त सांस्कृतिक विरासत को बचाने के लिए औपचारिक समझौता, सांस्कृतिक विभिन्नता को व्यक्त करने की सुरक्षा और उन्नति के लिए औपचारिक समझौता (2005) में किया गया है ।

हालांकि, विश्व में बोली जाने वाली 7000 भाषाओं में से 50% से अधिक भाषायें कुछ पीढ़ियों बाद लुप्त हो सकती हैं । एक चौथाई से भी कम ये भाषायें वर्तमान में स्कूलों में और साइबर स्पेस में उपयोग की जाती हैं और उनमें से अधिकतर यत्र-तत्र उपयोग की जाती हैं । हजारों ऐसी भाषाएँ, जो अधिकतर जनसंख्या द्वारा रोज़मर्रा उपयोग में लाई जाती हैं, वे शिक्षा व्यवस्था, मीडिया, पुस्तकें और सामन्य जनता क्षेत्रों से नदारद हैं ।

हमें इस कार्य को तुरंत करना होगा । कैसे ? इसके लिए ऐसी भाषा नीतियों का विकास और प्रोत्साहन करना होगा, जो प्रत्येक भाषाई समुदाय को अपनी प्रथम भाषा या मातृभाषा का यथा संभव व्यापक प्रयोग करने और उसमें शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रेरित करे, साथ ही उन्हें एक राष्ट्रीय या क्षेत्रीय भाषा और एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा में पारंगत होने में मदद करे । एक प्रभावशाली भाषा के बोलने वालों को दूसरी अन्य राष्ट्रीय या क्षेत्रीय भाषा और एक या दो अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं को सीखने के लिए प्रोत्साहन दे । सिर्फ यदि बहुभाषाई आयाम को पूर्णतया स्वीकार कर लिया जाए, तो सभी भाषाएँ विश्व में अपना स्थान पा सकेंगी ।

अतः यूनेस्को सभी सरकारों, संयुक्त राष्ट्र संघ, नागरिक सामाजिक संघों, शिक्षा संस्थानों, व्यावसायिक संघों और अन्य सभी भाग लेने वालों का आह्वान करता है कि वे सभी भाषाओं, विशेषतः संकटापन्न भाषाओं के प्रोत्साहन व संरक्षण हेतु अपने क्रियाकलापों को बढ़ाएँ, जिससे व्यक्तियों और उनके समूहों में भाषा के प्रति सम्मान बढ़े ।

चाहे यह शिक्षा के क्षेत्र में उठाए गए कदमों, साइबर स्पेस और साहित्यक वातावरण, योजनाओं और संकटापन्न भाषाओं का संरक्षण, भाषाओं को प्रोत्साहन देने, सामाजिक एकता के यंत्र के रूप में और भाषाओं और आर्थिक व्यवस्था के बीच रिश्तों को बढ़ाने, भाषाओं और देशी ज्ञान और भाषा तथा उद्भव इन सबके पीछे यही विचार है कि भाषाओं को प्रत्येक जगह प्रोत्साहित किया जाए ।

नौवें अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का दिन 21 फरवरी 2008 का विशेष महत्व होगा । इस दिन भाषाओं के प्रचार-प्रसार हेतु अपनाए गए चरणों की शुरूआत के लिए उचित समय सीमा निर्धारण का किया जाएगा ।

हमारा साझा लक्ष्य यह है कि राष्ट्रीय, स्थानीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर मान्यता प्राप्त शैक्षणिक, प्रशासनिक तथा विधिक प्रणालियों, सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों तथा मीडिया, साइबरस्पेस तथा व्यापार में भाषायी विविधता तथा बहुभाषायीवाद के महत्त्व को सुनिश्चत करें ।

भाषाओं का अंतर्राष्ट्रीय दिवस 2008 उपर्लिखित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में निर्णायक प्रगति करने हेतु अनुकूल अवसर प्रदान करेगा ।

कोईकीरो मत्सुरा

05-11-2007